अलख दृष्टि

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

प्रवेशांक • वर्ष-1 • अंक-1 • जनवरी-मार्च, 2013

नववर्ष पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ–

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'

मानद सम्पादक, अलख दृष्टि

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
01.	दार्शनिक शोध-पद्धति विज्ञान	प्रो. एस.पी. दुबे	01-11
02.	असामयिक है जय-पराजय का मॉडल	प्रो. बच्छराज दूगड़	12-14
03.	वेदनिहित कर्म का वैज्ञानिक दृष्टिकोण	प्रो. सत्यप्रकाश दुबे	15-21
04.	मूल्यपरक आचरण हेतु संस्कृत शिक्षा की अनिवार्यता	प्रो. लोकमान्य मिश्र	22-25
05.	धर्मशास्त्रों में नारी स्वरूप, उनके अधिकार व भ्रूणहत्या रोकथाम	डॉ. शंकरलाल शास्त्री	26-31
06.	भारतीय दर्शन में कारण-कार्यवाद	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	32-38
07.	समाजोन्नयन में शिक्षित ग्रामीण युवाओं की भूमिका	डॉ. बिजेन्द्र प्रधान	39-43
08.	सामाजिक जीवन में अहिंसा की उपयोगिता	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	44-48
09.	युवाओं में अभिप्रेरणा की कमी एवं सामाजिक विघटन	श्रीमती पुष्पा मिश्रा	49-51
10.	The Concept of Service in Jainism	Dr. Pradyumna Shah Singh	52-56
11.	Teaching English to the Underprivileged Students	Ms. Tripti Tripathi	57-60
12.	Understanding of Personality Development from Sikh Point of View	Gurdeep Singh	61-64

Scanned by CamScanner

समाजोन्नयन में शिक्षित ग्रामीण युवाओं की भूमिका

डॉ. बिजेन्द्र प्रधान

भूमिका

इस लेख में भारत के शिक्षित युवाओं का समाज के उन्नयन में भूमिका को केन्द्रित किया गया है। उसमें से भी विशेष तौर पर ग्रामीण युवाओं की। युवा पीढ़ी राष्ट्र की शक्ति का प्रतीक है। यह देश को आर्थिक विकास एवं प्रगति की ओर ले जाती है। लेकिन आयु समूहों का असंतुलन विकास के कार्यक्रमों को हानि पहुंचाता है। शिक्षित युवा पीढ़ी प्रत्येक देश में किसी भी समाज एवं क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है। विकासशील देशों में तो शिक्षित युवाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि देश की सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति में एक अनुशासित, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं समर्पित युवा शक्ति का महत्त्व मानव शरीर में प्रवाहित होने वाले रक्त जैसा है। युवा हमारे देश की आशा एवं भविष्य का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं।

भारत एक विकासशील देश है, भारत की 70% आबादी गांवों में रहती है उस आबादी का आधे से ज्यादा हिस्सा युवा है। युवाओं की समाज के उन्नयन में भागीदारी शहरी क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। देश की जनसंख्या का सबसे ऊर्जावान और शक्ति से ओत–प्रोत तथा परिवर्तनकारी यह अंश समूह संभवतः सर्वाधिक मूल्यवान मानव संसाधन है।

देश की वृद्धि एवं विकास के परिप्रेक्ष्य में उभरते हुए शिक्षित युवा वर्ग का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत सरकार का यह लगातार प्रयास रहा है कि देश की बहुसंख्यक युवा आबादी की ऊर्जा एवं सामर्थ्य को इस तरह से नियोजित किया जाए जिससे उनको संगठित करके राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में जोड़ा जा सके। युवा अवस्था मनुष्य के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण चरण है क्योंकि इस अवस्था में वह अनेक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तन का अनुभव करता है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर युवा उस स्थिति को कह सकते हैं जिससे मानसिक शिशुता के साथ ही साथ संवेगात्मक स्थिरता आरम्भ होती है। शहरी युवाओं को शिक्षा सेवाएं ग्रामीण युवाओं से अधिक मिल पाती है। इसी कारण सरकारी तथा गैर सरकारी प्रयासों द्वारा ग्रामीण युवाओं के लिए अनेक प्रकार की शैक्षणिक कार्यक्रम/योजनाएं चलाई जाती हैं जैसे–उच्च शिक्षा योजना, तकनीकी शिक्षा, सर्व शिक्षा अभियान, शिक्षा मित्र, ब्लैक बोर्ड आपरेशन, नेहरू युवा केन्द्र, युवा मण्डल, ग्रामीण युवक, आदि इन विभिन्न शिक्षा कार्यक्रम/योजनाओं

Scanned by CamScanner

के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को शिक्षित कर समाज में उत्थान कर सकते हैं। वे इन योजनाओं तथा अन्य ग्राम विकास कार्यक्रमों के माध्यम से आने वाले समाज के विभिन्न चुनौतियों का सामना करने का प्रयास करते हैं।

परिचय

देश की जनसंख्या का तीन चौथाई हिस्सा गांवों में निवास करता है। अतएव राष्ट्र तभी शक्तिशाली एवं समृद्ध हो सकता है जब हमारे गांव गरीबी एवं पिछड़ेपन से मुक्त हो। भारत सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में द्रुतगामी तथा निरन्तर विकास के लिए कटिबद्ध है। देश का ग्रामीण विकास मंत्रालय अनेक योजनाओं के क्रियान्वयन में संलग्न है जिनका उद्देश्य ग्रामीण जनता को योग्य बनाकर उनके जीवन स्तर को सुधारना। गरीबी उन्मूलन तथा त्वरित सामाजिक आर्थिक विकास के उद्देश्य के साथ विकास कार्यक्रमों को एक विविधतापूर्ण रणनीति के द्वारा समाज के सर्वाधिक उपेक्षित वर्ग तक पहुंचाने के लिए क्रियान्वित किया जा रहा है उसमें भी विशेष तौर पर युवाओं के आर्थिक–सामाजिक विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में भी युवाओं को आगे लाने के लिए सभी राजनीतिक पार्टियां प्रयासरत हैं। उम्मीद है कि अगले सांसद चुनाव में लगभग 70 प्रतिशत राजनेता युवा होंगे जिनका मुख्य दायित्व होगा युवाओं की चुनौतियों को समाप्त करना। उसमें भी विशेषकर हमारे ग्रामीण युवाओं की क्योंकि उन्हें अच्छी शिक्षा, व्यवसाय, स्वास्थ्य, वातावरण, प्रशिक्षण, संगठन, जागरूकता आदि का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता है। जिसके कारण समाज का उत्थान नहीं हो पाता है। वर्तमान में विकास के प्रत्येक क्षेत्र में युवाओं को जोड़ा जा रहा है तथा उनकी भूमिका बहुत अहं मानी जा रही है क्योंकि भविष्य में समाज, राज्य एवं देश का उत्थान उन्हीं पर निर्भर है।

भागीदारी आधारित लोकतंत्र को सार्थक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए गैरसरकारी संगठनों, स्वयंसेवी समूहों और पंचायतीराज संस्थाओं को उचित भमिका प्रदान की गई है। ग्रामीण युवाओं के सामने कुछ चुनौतियां है जिसे यदि दूर किया जाय तो समाज का उत्थान तेजी से होगा। प्रमुख चुनौतियां निम्न हैं–

1. गरीबी–भारत में जनसंख्या करीब 121 करोड़ है और विश्व में चीन के बाद सबसे ज्यादा है और इस जनसंख्या के करीब 3/4 प्रतिशत लोग ग्रामीण भारत में निवास करते हैं जिसमें भी सबसे ज्यादा संख्या युवाओं की है। गरीबी के कारण युवा शिक्षा को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं, उन्नत प्रशिक्षण नहीं ले पा रहे हैं, कृषि में भी कोई खास समाधान नहीं मिल पा रहा है। जिसके कारण वे पिछड़ रहे हैं।

2. बेरोजगारी– भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि तथा कृषि जनित उत्पादन यहां के लोगों का जीवन स्रोत है। अशिक्षित तथा रोजगार विहीन व्यक्ति विकासशील नहीं बन पाते बल्कि उनका आर्थिक सामाजिक हर प्रकार का संतुलन बिगड़ जाता है तथा राजनैतिक आर्थिक अनेक प्रकार की व्याधियां उत्पन्न हो जाती है। देश व समाज की प्रगति, स्थिरता, एकता तथा अखंडता के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न करती है। पिछले 50 वर्षों में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में ग्रामीण विकास तथा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों पर करोड़ों रुपये व्यय करने के बावजूद भी ग्रामीण युवाओं का गरीबी निवारण तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि की दिशा में अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त हो सके हैं। लोग विशेष तोर पर युवाओं के जीवन स्तर में गुणात्मक व संख्यात्मक बदलाव तब तक संभव नहीं है जब तक कि प्रत्येक कार्यशील व्यक्ति को कार्य नहीं मिल जाता और यही ग्रामीण विकास की वृहद अवधारणा भी है युवाओं की सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति में सुधार ग्रामीण विकास योजनाओं के द्वारा लाया जा सकता है और जब इनका सुधार और उत्थान होगा तो समाज का उत्थान सम्भव होगा।

3. तकनीकी ज्ञान तथा कार्यकुशलता का अभाव–युवाओं (खास तौर पर ग्रामीण युवा) में अध्ययन पूरा करने के पश्चात् भी वे रोजगार तथा स्वरोजगार के पथ पर नहीं चल पाते, क्योंकि वर्तमान शिक्षा पद्धति की कुछ कमियों के कारण, पारिवारिक स्थिति ठीक न होने के कारण तथा इच्छाशक्ति की कमी के कारण युवाओं में तकनीकी ज्ञान का अभाव होता है तथा उनमें कार्यकुशलता नहीं होती, जिसके कारण वे रोजगार प्राप्त नहीं कर पाते।

4. उदासीन मानसिकता की समस्या– सबसे विकट समस्या ग्रामीण युवाओं की उदासीन मानसिकता की है, जिसने ग्रामीण युवाओं को कई समस्याओं से

Scanned by CamScanner

ग्रस्त कर दिया है। प्रबल भाग्यवादी विचारधारा ने उनकी क्रियाशीलता को अवरूद्ध सा कर रखा है। समन्वित ग्रामीण विकास योजना के अनेकों ऐसे लाभार्थी हैं। जिन्होंने इसका लाभ लेकर अपने परिवार की स्थिति में गतिशीलता लाई है तथा आत्मनिर्भरता का नमूना पेश किया है। इसके साथ ही समाज के विकास में अहम् भूमिका अदा किया है।

5. आपसी वैमनस्यता की समस्या– ग्रामीण क्षेत्रों में यह आधुनिक समस्या के रूप में उभर रही है क्योंकि यहाँ के युवाओं को रोजगार उपलब्ध नहीं है, अच्छी शिक्षा नहीं है, गरीबी है जिससे उनमें आपसी गुटबाजी, वर्चस्व की इच्छा तथा अलगाववाद की प्रवृत्ति पैदा हुई है और सहयोग की भावना में कमी आई है। आपसी वैमनस्यता ने गांव को कमजोर कर दिया है। इसे मिटाने की कोशिश होनी चाहिए।

6. मद्यपान– मद्यपान की समस्या भी आजकल ग्रामीण युवाओं में देखने को मिलती है। मद्यपान का व्यसन व्यक्ति की मानसिक दुर्बलता को दर्शाता है। पढ़े–लिखे युवक–युवतियां आधुनिकीकरण के फलस्वरूप एक तरह से फैशन के रूप में इसको स्वीकार कर रहे हैं। मद्यपान की आदत अनेक प्रकार की सामाजिक बुराईयों को जन्म देती है। परिणामस्वरूप वैयक्तिक और पारिवारिक विघटन की संभावनाएं बढ़ती है। जो समाज उत्थान में अवरोध पैदा कर रहा है।

इनके अलावा भी युवाओं के सामने अनेक समस्याएं व्याप्त हैं–सरकारी योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार, नशाखोरी, सामाजिक भेदभाव, राजनीतिक हस्तक्षेप आदि। ग्रामीण विकास योजनाओं एवं अन्य कार्यक्रमों, विभागों के द्वारा युवाओं की समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जाता रहा है ये योजनाएं किस हद तक सफल हो पाई है, क्या कमी रही तथा क्या किया जा सकता है इस लेख में विचार किया गया है।

ग्रामीण युवाओं को विकास कार्यक्रम के माध्यम से विकास कर समाज के उत्थान में उनकी भूमिका को निश्चित की जा सकती है–

ग्रामीण युवाओं के विकास की कुछ योजनाओं का वर्णन निम्न प्रकार से है–

1. नेहरू युवा केन्द्र–नेहरू युवा केन्द्रों का उद्देश्य ग्रामीण युवकों को अपने व्यक्तित्व एवं कौशल के विकास हेतु अवसर प्रदान करना तथा ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में सेवामुख के रूप में कार्य करने योग्य बनाना है। वे ग्रामीण युवकों में आत्मनिर्भरता, भारतीय होने में गौरव की भावना, समाजवाद, धर्म निरपेक्षवाद एवं प्रजातंत्र के मूल्यों, राष्ट्रीय एकता की भावना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता के राष्ट्रीय उद्देश्यों को आत्मसात करना चाहते हैं। परियोजना, चरित्र निर्माण, शारीरिक योग्यता एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों के वर्धन पर भी बल देती है।

नेहरू युवा केन्द्र योजना तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय द्वारा गैर छात्र ग्रामीण युवाओं को उभरने के अवसर और राष्ट्र निर्माण गतिविधियों में सुअवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 1972 में आरम्भ की गई थी। वर्ष 1987 में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की संकल्पना द्वारा विद्यमान केन्द्रों को पुनर्गठित करके स्वायत्तशासी विकास का गठन किया गया। इस प्रयास के परिणामस्वरूप नेहरू युवा केन्द्र संगठन का गठन हुआ। तब से अब तक गांवों में फैले 0.25 लाख युवा मण्डलों के नेटवर्क के साथ इसके 501 केन्द्र खोले गए हैं।

नेहरू युवा केन्द्र के प्रमुख कार्यक्रम–इस योजना के प्रमुख कार्यक्रम इस प्रकार हैं–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में स्वावलम्बी युवा मण्डलों, महिला मण्डलों का गठन करना।
2. व्यावसायिक प्रशिक्षण के अन्तर्गत युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए तकनीकी प्रशिक्षण जैसे सिलाई, कढ़ाई, मुर्गी पालन, बढ़ईगिरी, डेयरी इत्यादि में प्रशिक्षण दिलाकर उन्हें स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना।
3. ग्रामीण स्तर पर विलुप्त हो रही लोक संस्कृति को जीवित रखने के लिए समय–समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
4. ग्रामीण युवाओं के अन्दर श्रम की महत्ता को जगाने के लिए श्रमदान शिविरों का आयोजन करना।
5. ग्रामीण युवाओं के अन्दर शारीरिक कौशल, अनुशासन एवं चारित्रिक निर्माण के लिए समय–समय पर खेलकूद प्रतियोगिताओं जैसे बालीबाल, फुटबाल, कबड्डी, खोखो इत्यादि को आयोजित करना।

Scanned by CamScanner

6. युवा नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर एवं अन्तर्राज्यीय युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम आयोजित करना।
7. राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना करने के काम में युवकों की सक्रिय भागीदारी करना।[3]

2. विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में युवाओं के लिए कार्यक्रम–ग्रामीण विकास की योजनाओं को लम्बी अवधि के आधार पर स्वीकार किया जाये तथा उन पर कड़ी निगरानी रखी जाये क्योंकि विकास एक धीमी प्रक्रिया है।[4] विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में ग्रामीण विकास से संबंधित अनेकों कार्यक्रम चलाये गये, जिनमें से कुछ निम्न हैं–

प्रथम पंचवर्षीय योजना में युवाओं के विकास में लगे हुए संगठनों को सरकारी सहायता उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई। **द्वितीय पंचवर्षीय योजना** में युवाओं के लिए मुख्य कार्यक्रम थे–1. सामुदायिक विकास कार्यक्रम के एक अंग के रूप में युवा समूहों को गठित किया गया। 2. विभिन्न प्रकार के खेलों के लिए राष्ट्रीय संस्थान की स्थापना की गई। **तृतीय पंचवर्षीय योजना**–इस परियोजना में द्वितीय पंचवर्षीय योजना के कार्यक्रमों का विस्तार किया गया। **चतुर्थ पंचवर्षीय योजना**–इस परियोजना में विद्यार्थियों तथा गैर विद्यार्थियों के लिए युवा सेवाओं के विकास की बात कही गयी। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य युवाओं के व्यक्तिगत विकास की आवश्यकताओं तथा आदर्शवादी आकांक्षाओं की पूर्ति करना एवं उनकी बौद्धिक, मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों को उचित दिशा में गतिशील बनाना है। **पांचवी पंचवर्षीय योजना**–इस योजना में विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रमों में राष्ट्रीय सेवा योजना, इत्यादि के विकास पर प्रमुख रूप से बल दिया गया। **छठी पंचवर्षीय योजना**–इस योजना में शिक्षा मंत्रालय के एक कार्यक्रम के रूप में युवा विकास का उल्लेख किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय युवा नीति का निर्माण करने ग्राम पंचायतों से सम्बन्धित नेहरू युवा केन्द्रों एवं युवक मण्डलों की क्रियाओं को व्यापक बनाने तथा विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना का पुनरावलोकन करने पर बल दिया गया। **सातवीं पंचवर्षीय योजना**–इस योजना में प्रमुख कार्यक्रम निम्न थे–1. राष्ट्रीय युवा नीति का निर्माण, 2. युवाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, 3. राष्ट्रीय युवा पुरस्कारों की योजना, 4. राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूकता। **आठवीं पंचवर्षीय योजना**–1. नेहरू युवा केन्द्रों के क्रियाकलापों में अभिवृद्धि करने एवं इनके अनुश्रवण करने का कार्यक्रम क्रियान्वित किया गया। 2. युवा विकास केन्द्र नामक नई योजना चलाई गई। **नवीं पंचवर्षीय योजना**–विशेष आवश्यकताओं वाले युवाओं जैसे शारीरिक एवं मानसिक बाधिताओं से ग्रस्त, धीमी गति से सीखने वाले सामाजिक विचलन से ग्रस्त, मादक द्रव्य व्यसनी तथा एच.आई.वी. जैसे रोग से ग्रस्त युवाओं को विशेष प्राथमिकता दी गयी।[5] **दसवीं पंचवर्षीय योजना** में नवीं पंचवर्षीय योजना के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया गया। **ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना**–1. सभी के लिए विकास का समान अवसर उपलब्ध कराना। 2. शिक्षा एवं कौशल के विकास द्वारा सशक्तिकरण। 3. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम (नरेगा) के माध्यम से रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना। ग्रामवासियों की रूचि के सभी विषयों पर ग्राम सभा की बैठकों में विचार किया जाना चाहिए।[6]

3. जवाहर ग्राम समृद्धि योजना–जवाहर ग्राम समृद्धि योजना पहले की जवाहर रोजगार योजना का पुनर्गठित, सुव्यवस्थित और व्यापक रूप है। 1 अप्रैल, 1999 को शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण गरीबों के जीवन स्तर को सुधारना है। इस योजना को दिल्ली और चण्डीगढ़ को छोड़कर सारे देश में सभी ग्राम पंचायतों में लागू किया गया। योजना का मुख्य उद्देश्य गांव में रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए स्थायी परियोजनाओं सहित मांग प्रेरित बुनियादी ढांचे के निर्माण तथा ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब रोजगार, अल्प रोजगार वाले लोग इस योजना के लक्ष्य समूह हैं।

4. स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण–ग्रामीण समस्याओं का एकमात्र समाधान लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना और विकास में ही निहित है। इसलिए इस पर ही अधिक बल दिया जाना चाहिए तथा ग्रामीण उद्योगों को कृषि आधारित एवं समृद्ध होना चाहिए। हमें छोटे उद्योगों के संदर्भ में जापान का अनुसरण करना चाहिए।[7]

सकारात्मक कार्य तो इस बात में निहित हैं कि ग्रामीण क्षेत्र में उत्पादक शक्तियों को विकसित किया जाये तथा कृषि में मानव श्रम की उत्पादकता को ऊंचा उठाया जावे और कृषि पर जो वर्तमान काल में अत्यधिक दबाव पड़ रहा है, उसे कम किया जावे।[9]

Scanned by CamScanner

5. व्यक्तित्व विकास के लिए प्रशिक्षण– विभिन्न धर्मों के गुरुओं एवं आचार्यों द्वारा युवाओं के व्यक्तित्व विकास, मानवता विकास, अहिंसा एवं शांति के लिए प्रवचन, अभियान, प्रशिक्षण, व्याख्यान, रैलियों आदि के माध्यम से किया जा रहा है क्योंकि आज के विकास के युग में इन सबसे युवा अलग–थलग होते जा रहे हैं। इसके बिना उनका सही दिशा में विकास संभव नहीं है और जब उनका सही दिशा में विकास नहीं तो समाज, देश आदि का उत्थान संभव नहीं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ संघ के आचार्य महाश्रमण ने कहा– सचमुच जड़े ही कमजोर रह जायेंगी तो कैसे कोई वृक्ष पल्लवित और पुष्पित हो पायेगा। वे बाल पीढ़ी के संस्कार निर्माण हेतु प्रयासरत हैं और वह युवा पीढ़ी के प्रेरणास्रोत हैं।

आज व्यक्ति की सोच और उसकी जीवन शैली में बहुत बदलाव आया है। इसके अनेक दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। उन दुष्परिणामों का शिकार सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी हो रही है। इसलिए आचार्य महाश्रमण कहते हैं– "बच्चों को गलत संस्कारों से बचाना अपेक्षित है, सुसंस्कारी बालक ही सुखी परिवार का आधार है। बाल पीढ़ी यदि संस्कारित नहीं होगी तो युवा पीढ़ी के संस्कार सम्पन्न होने की बात कैसे संभव हो सकती है।"

निष्कर्ष एवं सुझाव

भारत की आधे से अधिक आबादी युवा आबादी में सम्मिलित है और उनमें भी अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं। भारत में विकास के पथ पर चलना है या समाज का सही दिशा में उत्थान करना है तो युवाओं को विशेषकर ग्रामीण युवाओं को शिक्षित एवं प्रोत्साहित करना होगा। विभिन्न ग्रामीण विकास योजनाओं द्वारा युवाओं को लुभाने का प्रयास तो किया गया जाता है परन्तु कई योजनाएं तो सिर्फ खाना पूर्ति ही रह जाती है। ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों और योजनाओं के क्रियान्वयन में व्यवस्था और भ्रष्टाचार के विरूद्ध सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार के साथ–साथ जनसामान्य को भी योजनाओं को क्रियान्वित करने वाली एजेन्सियों पर पैनी दृष्टि रखनी चाहिए। गांवों में हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और पेशेवर व्यवसायों को स्थापित और संरक्षित किया जाना चाहिए।

युवाओं को उनके विभिन्न अधिकारों एवं सूचना के अधिकार कानून की जानकारी तथा प्रशिक्षण मिलना चाहिए। जिससे वे इस अधिकार के माध्यम से अपने हक के लिए लड़ सके। युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण ग्राम स्तर पर ही उपलब्ध होना चाहिए, ताकि वे पलायन न करे। ग्रामीण युवाओं को राजनैतिक भागीदारी के माध्यम से ग्राम विकास के लिए अपनी भागीदारी निभानी चाहिए।

ग्राम स्तर पर युवाओं के विकास के लिए ऊर्जा, परिवहन और सिंचाई सहित आंतरिक संरचना को मजबूत करने की आवश्यकता है। जन सहभागिता की संस्कृति को बढ़ावा देना अति आवश्यक है। युवाओं को चाहिए कि वे स्वहित के बजाय जनहित पर अधिक ध्यान दें। मद्यपान और धूम्रपान जैसी कुरीतियों से ग्रामीण युवाओं को बचना चाहिए।

युवाओं को नैतिक मूल्यों की ओर पुनः लौटना पड़ेगा क्योंकि आजकल युवा आधुनिकता की दौड़ में नैतिकता को भूल चुका है। इस तरह ग्राम विकास कार्यक्रमों को सही रूप से लागू किया जाए तथा युवाओं को उचित मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण मिले तो ग्रामीण युवा भी देश में अपनी महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभा सकते हैं।

सन्दर्भः

1. कपूर, ए. के. सिंह, धरमवीर (1997), रूरल डेवलपमेण्ट थ्रू एनजीओज्, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 144
2. सिंह, डी.के. (2011), भारत में समाज कल्याण, न्यू रॉयल बुक कम्पनी, लखनऊ, पृ. 297–298
3. चोपड़ा, सरोज, स्थानीय प्रशासन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. 150
4. सिंह, डी.के., पालीवाल, सौरभ, मिश्रा, रोहित (2010), मानव समाज संगठन विघटन के मूल तत्त्व, न्यू रॉयल बुक कम्पनी, लखनऊ, पृ. 186–187
5. हिक्स : यू. के. (1961), डेवलपमेण्ट फ्राम बिलो, लन्दन, पृ. 7
6. तिवाड़ी, संजय, कोष्टा, शैलप्रभा (2009), ग्रामीण विकास (सरकार की विविध योजनाएं), ओमेगा पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 151
7. यादव, धमेन्द्र (2006), पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 17
8. देसाई, ए. आर. (1997), भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली, पृ. 67
9. www.nyks.org

Scanned by CamScanner